हालात

जल से जल रहा हूँ मैं

किस हालात में पल रहा हूँ मैं

दीपक प्रज्वलित भी जल रहा है

पर रोशनी आखिर है कहाँ

कभी मैं हंस देता कभी रो भी न पाता

मेरा मन ,तन बदन

निर्जीव सा खड़ा है

निर्जीव सा है कल मेरा

आज भी बौछार है

घर उजड़ रहा है

हर पल उजड़ रहा है

बादल काले ,दीप बुझता

मेरा मन आज भी भटकता

शोभित अग्रवाल